पहले दिन से ही एयरपोर्ट को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ेगा लॉजिस्टिक हब

हर साल 2.5 लाख टन माल संभालने की क्षमता वाला देश का पहला मल्टी-मॉडल कार्गो हब तैयार

खुलेगा वैश्विक व्यापार के नए अवसरों का द्वार

शशांक मिश्र

ग्रेटर नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर विकसित हो रहा अत्याधुनिक मल्टी-मॉडल कार्गो हब (एमएमसीएच) देश की लॉजिस्टिक्स क्रांति का अगला अध्याय लिखने को तैयार है। एयर इंडिया एसएटीएस एयरपोर्ट सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड की ओर से तैयार कार्गो हब बनकर पूरी तरह तैयार है और नोएडा एयरपोर्ट से उड़ान शुरू होने के पहले दिन से यह हब उत्तर भारत को वैश्विक लॉजिस्टिक्स नेटवर्क से सीधे जोड़ देगा।

एयरपोर्ट के संचालन के साथ ही शुरू होने वाली कार्गो सेवा के जरिये यूपी-एनसीआर के उद्योगों को सीधा वैश्विक संपर्क मिलेगा। इससे दिल्ली एयरपोर्ट पर भी निर्भरता कम हो जाएगी।

दिल्ली-एनसीआर के साथ ही उत्तर भारत के उद्योगों को देश और दुनिया तक अपने उत्पाद आसानी से पहुंचाने की राह खुल जाएगी। नोएडा एयरपोर्ट पर बनकर तैयार पहला ऐसा कार्गो हब होगा, जहां अंतरराष्ट्रीय कार्गो टर्मिनल (आईसीटी) और इंटीग्रेटेड वेयरहाउसिंग एंड लॉजिस्टिक्स जोन के बीच सीधा और निर्बाध संपर्क होगा। एयर इंडिया एसएटीएस छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए विशेष सेवा मॉडल विकसित कर रहा है, जिसमें सरलीकृत कस्टम प्रक्रिया, कम लागत पर लॉजिस्टिक्स समाधान, और डिजिटल सहायता शामिल होंगे। इससे किसानों, हस्तशिल्पकारों और छोटे व्यापारियों को अपने उत्पाद सीधे अंतरराष्ट्रीय बाजार में भेजने का अवसर मिलेगा। इस हब में ई-कॉमर्स, फार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल जैसे उद्योगों के लिए डेडिकेटेड जोन होंगे।

रियल टाइम ट्रैकिंग और तेज टर्नअराउंड टाइम से यह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में शामिल होगा। दरअसल, 30 एकड़ में फैले कार्गो टर्मिनल में जनरल, पेरिशेबल्स, फार्मास्युटिकल्स, एक्सप्रेस कुरियर और स्पेशल (जैसे खतरनाक, कीमती और संवेदनशील) कार्गो को संभालने की व्यवस्था है। कार्गो संचालन को तेज और पारदर्शी बनाने के लिए इसमें क्लाउड-बेस्ड ट्रैक-एंड-ट्रेस सिस्टम लगाया गया है। 87 एकड़ क्षेत्र में फैले इस हब के इंटीग्रेटेड वेयरहाउसिंग एंड लॉजिस्टिक्स जोन में 42 ट्रकों की पार्किंग क्षमता वाला केंद्र और 27 भारी वाहनों के लिए डॉकिंग जोन तैयार हो चुका है। यहां बॉन्डेड वेयरहाउस और लॉजिस्टिक्स पार्क भी होंगे, जिससे माल ढुलाई तेज और किफायती होगी।

नोएडा की ओर शिफ्ट होगा कार्गो दबाव

अब तक दिल्ली एयरपोर्ट पर लॉजिस्टिक्स की अधिकतम निर्भरता थी, जिससे वहां की क्षमता पर लगातार दबाव बढ़ रहा था। नोएडा कार्गो हब इस दबाव को कम करेगा और पूर्वी उत्तर प्रदेश, एनसीआर, हरियाणा जैसे क्षेत्रों को तेज और सस्ता विकल्प देगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यह हब प्राथमिक कार्गो गेटवे के रूप में उभर सकता है। इस केंद्र को भारत के पहले ग्रीन लॉजिस्टिक्स हब के रूप में विकसित किया गया है। इसमें सौर ऊर्जा, वर्षा जल संचयन, ऊर्जा दक्ष उपकरण और ईको-फ्रेंडली ढांचा है। पहले चरण का अंतरराष्ट्रीय कार्गो टर्मिनल भवन पूरी तरह तैयार है। कार्गो यूनिट लोड डिवाइसेज को हैंडल करने के लिए कास्टर डेक और मोटराइज्ड वर्कस्टेशंस लगाए जा चुके हैं। स्क्रीनिंग उपकरण भी अप्रैल तक पूरी तरह स्थापित हो जाएगा। यह देश का अगला लॉजिस्टिक्स सुपरहब बनने की ओर अग्रसर है।

> “पहले चरण का अंतरराष्ट्रीय कार्गो टर्मिनल भवन पूरी तरह तैयार है। कार्गो यूनिट लोड डिवाइसेज को हैंडल करने के लिए कास्टर डेक और मोटराइज्ड वर्कस्टेशंस लगाए जा चुके हैं। स्क्रीनिंग उपकरण भी अप्रैल तक पूरी तरह स्थापित हो जाएगा। यह देश का अगला लॉजिस्टिक्स सुपरहब बनने की ओर अग्रसर है। – **रामनाथन राजमणि, सीईओ, एयर इंडिया एसएटीएस एयरपोर्ट सर्विसेज प्रा. लि.**

दूसरे चरण में बनेगा अत्याधुनिक कूलपोर्ट

एआईसैट्स ने उत्तर प्रदेश की फूड प्रोसेसिंग नीति 2023 के तहत हब को लाभकारी बनाने की योजना बनाई है। इसके दूसरे चरण में एक विश्वस्तरीय कूलपोर्ट विकसित किया जाएगा, जो एग्री-पेरिशेबल्स और तापमान-संवेदनशील कार्गो को संभाल सकेगा। राज्य सरकार ने हाल ही में फल-आधारित प्रसंस्करण इकाई की वित्तीय व्यवहार्यता पर अध्ययन के लिए एक समिति गठित की है। यह यूनिट स्थानीय किसानों से फलों की खरीद कर टिन्ड फ्रूट्स और जूस के निर्यात के लिए तैयार करेगी।

चाइना प्लस वन रणनीति में बनेगा विकल्प

एयरपोर्ट पर बन रहा एमएमसीएच उत्तर भारत को वैश्विक लॉजिस्टिक्स के नक्शे पर प्रमुख गेटवे के रूप में स्थापित होगा। इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्युटिकल्स और एग्री-प्रोडक्ट्स जैसे क्षेत्रों में चाइना प्लस वन रणनीति के खिलाफ भारत का मजबूत विकल्प बन सकता है।